दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ratan Seth Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल न. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट न. एवं दिनांक (Test No. & Date): 16th July 2017 – Test 01

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ratan Seth Gupta

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 133

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। उत्तर-लेखन का अभ्यास करते रहें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) पहाड़ी हिंदी

हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों में पहाड़ी हिन्दी विशिष्ट स्थान रखती है।

पहाड़ी हिन्दी मुख्यतः उत्तरांचल के क्षेत्रों में बोली जाती है। यहाँ भी इस भाषा के दो भेद पाये जाते हैं।

पहाड़ी हिन्दी की भाषागत विशेषताओं में शब्दों को खींचकर बोलने की प्रवृत्ति यथा छोड़यौं देखने को मिलती है। स्थानीय स्तर भी पहाड़ी हिन्दी में बोलीगत परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

यद्यपि पहाड़ी हिन्दी एक बोली है एवं साहित्यिक रूप से इसका विकास विशेष नहीं है परन्तु स्थानीय स्तर पर यह बहुतायत से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग की जाती है। हिन्दी की विभिन्न बोलियों में इसका भी विशिष्ट स्थान है।

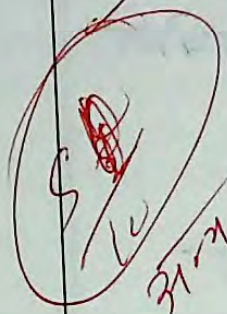

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

यद्यपि खड़ी बोली हिन्दी का व्यापक प्रयोग 19वीं शताब्दी में ही शुरू हुआ परन्तु अमीर खुसरो के समय से ही खड़ी बोली के प्रारम्भिक स्वरूप देखने को मिलते हैं।

मध्यकाल में रहीम के काव्य में भी खड़ी बोली हिन्दी के प्रारम्भिक स्वरूप देखने को मिलते हैं। यद्यपि रहीम की भाषा ब्रजभाषा के निकट मानी जाती है परन्तु खड़ी बोली के साथ मिश्रण भी देखने को मिलता है। एक उदाहरण –

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी बिना न उबरै, मोती मानुस चून।"

वस्तुतः रहीम के काव्य में हिन्दी खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा के मिश्रण के अतिरिक्त प्रारम्भिक खड़ी बोली की रचनाएँ भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान संख्या के अतिरि न लिखें।
(Please do no anything exce question num this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

देखने को मिलती है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

मध्यकाल में अवधी को उसकी सर्वोच्चता के शिखर पर पहुँचाने में जायसी एवं तुलसी का अविस्मरणीय योगदान है।

अवधी भाषा में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत समेत अनेक ग्रंथों की रचना की। अवधी के ठेठपन एवं मिठास को जायसी ने अपने काव्य के माध्यम से व्यक्त किया है एक उदाहरण-

"मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी, नाहि ते का छार एक मूंठी"

जायसी की अवधी, संस्कृत की तत्सम परम्परा नहीं बल्कि जनसामान्य के हृदय को छू लेने वाली अवधी है। जायसी ने 'हिय भय' 'खंगरा' जैसे शब्दों का प्रयोग कर अवधी को जन-मन में लोकप्रिय बनाया।

अपने प्रेम की पीर पद्मावत के माध्यम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से जायसी ने अवधी को अति उत्कृष्ट परम्परा से युक्त कर दिया।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

अपभ्रंश अपने शाब्दिक अर्थ में एक भ्रष्ट भाषा के रूप में जानी जाती है। स्पष्ट रूप से इस भाषा के विकास में विभिन्न स्थानों की परिस्थितियों का भी योगदान रहा।

प्राकृत से आगे बढ़ते हुए विभिन्न स्थानीय परिस्थितियों के कारण शौरसेनी अपभ्रंश, अर्द्धमागधी अपभ्रंश जैसी प्रवृत्तियों का विकास देखा जा सकता है।

अपभ्रंश के सामान्यत: 6 भेद किये जाते हैं। इन भेदों में अपभ्रंश की मूल प्रकृति तो स्थायी होती है परन्तु स्थानीय प्रभावों के फलस्वरूप अपभ्रंश की ध्वनि संरचना, व्याकरणिक विशेषताओं में कुछ अन्तर भी देखने को मिलता है।

4 1/2 /15

और गहराई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिन्दी भाषा क्षेत्र का सामान्य अर्थ यह है कि जहाँ हिन्दी भाषा बोली अथवा समझी जाती है।

मुख्यतया उत्तर भारत के वे 10 राज्य जहाँ हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है यहाँ सम्मिलित है जैसे- उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तरांचल इत्यादि।

इसके पश्चात ऐसे क्षेत्र आते हैं जहाँ हिन्दी प्रथम भाषा के स्तर पर तो नहीं है परन्तु बोली एवं समझी जाती है यथा पश्चिम बंगाल, पंजाब इत्यादि।

इसके साथ ही विदेशों में भी कई ऐसे स्थान हैं जहाँ हिन्दीभाषियों की अच्छी खासी संख्या है और वे हिन्दी भाषा क्षेत्र में सम्मिलित किये जाते हैं यथा-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ ...खें।
(...se do not write ...hing except the ...tion number in ...space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्रिनिडाड एवं टोबैगो

इस प्रकार हिन्दी भाषा क्षेत्र एक व्यापक अवधारणा है जो हिन्दी भाषा एवं भाषियों के भौगोलिक प्रसार को सम्मिलित करता है।

विश्व हिन्दी क्षेत्र की बात है।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काव्यभाषा के रूप में मध्यकाल में ब्रजभाषा का अभूतपूर्व विकास हुआ। भक्तिकालीन कृष्ण धारा के कवियों एवं रीतिकालीन कवियों द्वारा इस भाषा को इसके चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया गया।

भक्तिकालीन कृष्ण धारा के कवियों में सूरदास का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। सूरदास ने अपने भक्ति, प्रेम एवं वात्सल्यपूर्ण काव्य से ब्रजभाषा को चार चाँद लगा दिये। एक उदा-

"मैया कबहि बढ़ेगी चोटी, किती बार मोहि दूध पियाप भई, यह अजहूँ है छोटी।"

ब्रजभाषा की चंचलता, और शृंगार की क्षमता को भी सूरदास ने पहचाना -

"मधुबन तुम कत रहत हरे, विरह वियोग श्याम सुन्दर के ठाड़े क्यों न जरे।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भक्ति, श्रृंगार को नंददास एवं कुंभनदास जी ने योगदान दिया और ब्रजभाषा निरंतर लोकप्रिय होती गई।

यहाँ तक कि महाराष्ट्र में कवि भूषण भी शिवा जी की प्रशंसा ब्रजभाषा में करते दिखाई देते है।

रीतिकालीन कवियों ने ब्रजभाषा की चंचलता, अनुभवता एवं समाहार क्षमता का सम्पूर्ण दोहन किया। जहां एक ओर कविवर बिहारी ने रीतिबद्ध एवं रीतिसिद्ध काव्यों में तो वही घनानंद रीतिमुक्त काव्य में ब्रजभाषा को निरंतर ख्याति प्रदान करते रहे।

बिहारी के दोहों ने गागर में सागर भर दिया और उनकी समाहार क्षमता का एक उदाहरण देखे —

"कहत, नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियत
भरे भौन में करत है नैनन ही सो बात"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तो वहीं दूसरी ओर घनानंद ने रीतिमुक्त काव्य के माध्यम से ब्रजभाषा को औदात्य प्रदान किया।

यह वह दौर था जब ब्रजभाषा अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर रही थी, यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह अखिल भारतीय स्वरूप मूलतः हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

केवल मध्यकाल ही नहीं, 20वीं सदी के प्रथम दो दशकों तक भी ब्रजभाषा ही काव्य की प्रमुख भाषा के रूप में विराजमान रही है। संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय काव्य परम्परा में ब्रजभाषा का अभूतपूर्व योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बुंदेली बोली के भौगोलिक क्षेत्र पर प्रकाश डालते हुए उसकी भाषिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 15

बुंदेली बोली का क्षेत्र दक्षिण उत्तरप्रदेश एवं उत्तरी मध्यप्रदेश के मध्य स्थित बुंदेलखण्ड के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

बांदा, चित्रकूट जैसे जिले इस क्षेत्र में आते हैं। यद्यपि इस बोली का विस्तार क्षेत्र के अन्य क्षेत्रों में भी प्रसार देखा गया है।

बुंदेली बोली, हिन्दी की विभिन्न बोलियों में से एक है। ओजपूर्ण भाषा के माध्यम से काव्य सृजन इसकी विशेषता मानी जाती है। कुछ विद्वान इस बोली पर राजस्थानी के शब्दों का प्रभाव भी स्वीकार करते हैं।

बुंदेली बोली में 'ट' एवं 'ड' वर्ण की प्रधानता को देखा जाता है। इसके अतिरिक्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस बोली को अक्खड़ता की श्रेणी में भी रखा जा सकता है।

बुंदेली बोली स्थानीयता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है एवं आल्हा जैसी स्थानीय प्रवृत्तियाँ इस बोली में देखने को मिलती है।

7/15

और गहराई लाएं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
nything except the
uestion number in
is space)

(ग) भाषा के धरातल पर हिन्दी को अपभ्रंश का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

संस्कृत भाषा के साथ तद्भवीकरण की जो ~~प्रक्रिया~~ प्रक्रिया प्रारम्भ हुई वह निरन्तर चलती रही और इसी क्रम में अपभ्रंश एक प्रकार से हिन्दी की पूर्वपीठिका के निर्माण में सहायक रहा है।

अपभ्रंश में ध्वनि संरचना का हिन्दी में स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। अकारान्तता, जैसी प्रवृत्तियाँ अपभ्रंश की देन मानी जाती है।

यदि व्याकरणिक स्तर पर देखें तो अपभ्रंश की अनेक विशेषताएँ हिन्दी भाषा में देखने को मिलती है। यथा संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग अपभ्रंश एवं हिन्दी में बहुत मिलता जुलता है।

अपभ्रंश में वचन केवल दो है, जो संस्कृत की परम्परा से अलग है, हिन्दी में भी दो ही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्र... संख्या के अतिरिक्त ... न लिखें। (Please do not w... anything except ... question number ... this space)

क्या स्वीकार किये गये है। अपभ्रंश अपभ्रंश में दो लिंग स्वीकार किये गये है- हिन्दी में भी यही व्यवस्था स्वीकार की गयी है।

अपभ्रंश में विभक्तियों के स्थान पर परसर्गों का प्रयोग बहुतायत से होने लगा हिन्दी में भी परसर्गों का प्रयोग होता है।

इसी प्रकार कारक व्यवस्था, संज्ञा, सर्वनाम, काल इत्यादि के स्तर भी अपभ्रंश को हिन्दी की पूर्व पूर्वपीठिका होने का गौरव प्रदान किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

विद्यापति की सौंदर्य चेतना स्वयं में विशिष्टतायुक्त है। आदिकाल में अवहट्ट में विद्यापति ने कीर्तिलता, कीर्तिपताका एवं पदावली में अपने काव्य के माध्यम से इस विशिष्टता को व्यक्त किया है।

जहाँ पदावली में विद्यापति ने कृष्ण व राधा के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया है तो वहीं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे विद्वान इन पर अश्लीलता के आरोप भी लगाते हैं।

विद्यापति की राधा कृष्ण के स्वरूप को देखकर मुग्ध हो जाती है—

"जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल"

तो वहीं राधा की सुंदरता को भी विद्यापति ने "जहँ जहँ पग धरई तहँ तहँ सरोरुह भरई। जहँ जहँ झलकत अंग, तहँ तहँ बिजुरि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तरंग।" के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

विद्यापति ने अपने शृंगार काव्य के माध्यम से भक्ति को सम्मिलित कर एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। हाँ यह अवश्य है कि कीर्तिलता में उनके शिवसिंह की प्रशंसा एवं पदावली में भक्ति की आड़ में अश्लीलत्व के आरोप भी लगे हैं।

विद्यापति की सौंदर्य चेतना उनके शृंगार एवं भक्ति के मिश्रित काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है और अपनी सीमितताओं के बावजूद यह विशिष्ट है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय शब्दों के शिल्पी कहे जाते हैं और अपने सम्पूर्ण रचनाकाल में वे एक सजग शिल्पी रहे हैं।

अज्ञेय की कहानियाँ कहानी के इस ~~प्रयोगवादी~~ दौर के उन तत्वों का बोध कराती हैं जो मनोविश्लेषण वादी धारा में प्रवृत्त था।

अज्ञेय की कहानियों में व्यक्तित्व का विखण्डन, कथानक का टूटना, अधिक घटनाओं के वर्णन के स्थान पर कुछ ही घटनाओं का सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जैसे प्रमुख तत्व दिखायी देते हैं।

भाषा के स्तर पर शब्दों का सधा हुआ प्रयोग, बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता जैसे तत्व भी उभर कर सामने आते हैं। अज्ञेय ने अपने-अपने उपन्यासों जैसे कि शेखर एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जीवनी में भी इसी प्रकार के भाषा एवं शिल्प का प्रयोग किया है।

इस प्रकार अज्ञेय की कहानियाँ शिल्प के स्तर पर उत्कृष्टता को व्यक्त करती है।

6/10

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा

भारतीय नाटकों के मंचन एवं इसको नई ऊँचाइयाँ देने में इप्टा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

20वीं शताब्दी में इप्टा, जो कि एक थियेटर एसोसिएशन था, ने विभिन्न शहरों में नाटकों के मंचन के माध्यम से भारतीय नाट्य परम्परा के उत्कृष्ट विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

इप्टा के सदस्यों में महत्वपूर्ण साहित्यकार एवं नाटककार थे। इन साहित्यकारों ने नाटकों के मंचन के माध्यम से न केवल भारतीय जनमानस में नाटकों के प्रति रुचि को बढ़ाया बल्कि नवीन नाटकों के मंचन से भारतीय रंगमंच की उत्कृष्टता को भी निखारा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतन्त्रता के पूर्व एवं बाद के दौर में इप्टा एवं पृथ्वी थियेटर जैसी संस्थाओं ने भारतीय नाट्य रंगमंच की उत्कृष्ट परम्परा को आगे बढ़ाया।

4/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

साठ के दशक में नई कहानी के विरोध में अकहानी आन्दोलन का जन्म हुआ।

अकहानी आन्दोलन वस्तुतः फ्रांस के एंटी स्टोरी मूवमेन्ट से प्रभावित आन्दोलन माना जाता है।

संवेदनात्मक विशेषताएँ -

अकहानी आन्दोलन में कथानक का ह्रास, सम्बन्धों का खोखला होना, मध्यम वर्ग की ऊब, अकेलापन, अजनबीपन, किसी भी प्रकार की नैतिकता का न होना, परपुरुष एवं स्त्री के साथ यौन सम्बन्धों का प्रदर्शन जैसे तत्व प्रमुखता से दिखाई देते हैं।

भाषागत विशेषताएँ -

अकहानी किसी भी प्रकार के नियमों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को स्वीकार करने का पक्षधर नहीं। यह किसी शिल्पगत विशेषता पर जोर नहीं देता है।

इस प्रकार अकहानी संवेदनात्मक एवं शिल्पगत विशेषताओं पर निर्धनों का विरोध एवं जीवन की घोर विसंगतियों को प्रस्तुत करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड) नाटककार रामकुमार वर्मा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामकुमार वर्मा एक प्रसिद्ध एकांकीकार एवं नाटककार रहे हैं। जयशंकर प्रसाद के पश्चात नाटकों की परम्परा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

वर्मा जी के नाटकों में एक सरसता एवं प्रभावपूर्ण समरसता दृष्टिगोचर होती है। वर्मा जी के नाटक कई बार आस-पास के परिवेश को व्यक्त करते हुए प्रकट होते हैं तो कई बार कल्पनीय धरातल पर- परन्तु सामाजिक मुद्दों का समावेश उसमें सबल विद्यमान है।

रंगमंच के विधानों की दृष्टि से भी वर्मा जी के नाटक उत्कृष्ट प्रकृति के हैं। पात्रों का चित्रण, संवाद, इत्यादि भी वर्मा जी के नाटकों को विशिष्टता प्रदान करते हैं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संक्षेपत: वर्मा जी अपने समय के एक उत्कृष्ट नाटककार रहे हैं।

3½/10

और गद्य (इतिहास)? प्रमुख नाटकों और कविताओं का नामोल्लेख कीजिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूफी दर्शन इस्लामिक एकेश्वरवाद में विश्वास करता है। यद्यपि सूफियों का इस्लाम की मूलभूत मान्यताओं से कुछ विभेद भी है।

सूफी दर्शन पर भारतीय अद्वैतवाद के तथा प्लेटो के दर्शन का भी प्रभाव दिखाई देता है। सूफी दर्शन अद्वैतवाद के "अहं ब्रह्मास्मि" को 'अनहलक' के रूप में स्वीकार करता है।

सूफियों की मान्यता है कि बंदा और खुदा के मिलन का मार्ग संभव है। वे खुदा को प्रेमिका एवं बंदे को प्रेमी के रूप में स्वीकार करते हैं एवं गहरे प्रेम की तड़प उनके दर्शन का प्रमुख भाग है उदाहरणस्वरूप जायसी लिखते हैं-

'मानुस प्रेम भएऊ बैकुंठी नाहि तेका छार एक मूंठी'

सूफी दर्शन इश्क मजाजी से ईश्क हकीकी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में विश्वास करता है अर्थात लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की प्राप्ति। सूफियों के काव्य में लौकिक प्रेम तो केवल प्रतीक होता है। उदाहरणस्वरूप पद्मावत में पद्मावती को खुदा का स्वरूप माना गया है।

सूफी दर्शन रहस्यवादी दर्शन को भी व्यक्त करता है। यह प्रेम को सबसे महत्वपूर्ण तत्व घोषित करता है एवं गुरु की महत्ता पर भी बल देता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि सूफी दर्शन में गुरु कोई भी हो सकता है उदाहरणस्वरूप पद्मावत में गुरु सुआ तोते को माना गया है।

जहाँ इस्लाम की मान्यता है कि खुदा सर्वोच्च है एवं बंदा उससे मिलकर एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं हो सकता है वही सूफी दर्शन की मान्यता है की खुदा और बंदे का मिलन संभव है।

सूफी दर्शन वस्तुतः समन्वय का दर्शन है और भारत की सामासिक संस्कृति के विकास में उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सूफियों के काव्य में भारतीय परम्परा की कहानियों, देवताओं को अपने स्पष्ट रूप में व्यक्त किया गया है।

इस प्रकार सूफी दर्शन इस्लामिक परम्परा एवं अद्वैत के प्रभाव से उत्पन्न एक उत्कृष्ट परम्परा है जो आज भी सजीवता के साथ पुष्पित एवं पल्लवित हो रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी कहानी के विकास में जिन प्रमुख महिला कहानीकारों ने अविस्मरणीय योगदान दिया है उनमें कृष्णा सोबती विशिष्ट है।

कृष्णा सोबती हिन्दी कहानी के नारी विमर्श की सशक्त लेखिका रही हैं। नारी विमर्श के स्वयंवेदना के विचार को उन्होंने बड़े ही बोल्ड अंदाज में व्यक्त किया है।

उनकी कहानियों में स्त्री अपने ऊपर लादी गयी नैतिकताओं की खोखली परत को उतारकर अपने मूल स्वरूप में अवतरित होने को आतुर दिखती है। 'आज़ादी शम्मोजान की', 'मित्रो मरजानी' जैसी कहानियों में इस तत्व को देखा जा सकता है।

यदि बात शिल्प एवं भाषा की करें तो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृष्णा सोबती को पंजाबी मिश्रित हिन्दी के प्रयोग के लिए जाना जाता है। दो टूक एवं चुस्त संवाद एवं अपने बेबाक अंदाज के लिए वे प्रसिद्ध रही हैं।

हिन्दी साहित्य में गालियों के प्रयोग को लेकर भी वे चर्चित रही हैं। यद्यपि सूक्ष्मतापूर्ण विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह उनकी बेबाक शैली एवं कहानी के पात्रों के अनुकूल ही प्रयुक्त हुआ है।

हिन्दी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती ने नारी विमर्श को नई दिशा दी है। वे हिन्दी कहानी से सशक्त स्तम्भों में से एक रही हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित बहुचर्चित नाटकों यथा स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी अपनी पात्र योजना, कथोपकथन, चरित्रों की स्पष्टता एवं दृढ़ता के लिए चर्चित रहे हैं।

'ध्रुवस्वामिनी' प्रसाद का वह नाटक है जिसमें उन्होंने नारी की समस्याओं को इंगित एवं विश्लेषित किया है। प्रसाद इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि क्या नारी का पुनर्विवाह का अधिकार है और उत्तर में इसको सकारात्मक रूप से स्वीकार करते हैं।

दूसरी समस्या के रूप में क्या अयोग्य शासक को हटाने का अधिकार होना चाहिए को विश्लेषित करते हैं और इसे भी स्वीकार करते हैं।

चरित्रों की स्पष्टता एवं दृढ़ता की दृष्टि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

से यह प्रसाद का महत्वपूर्ण नाटक है।

प्रसाद ने तत्सम प्रधान शब्दावली का प्रयोग किया है एवं स्वभावानुरूप रंगमंच योजना प्रस्तुत की है।

यद्यपि जैसा कि प्रसाद के अन्य नाटकों पर यह आरोप लगते रहे हैं कि उनका मंचन कठिन है, इस नाटक का परिप्रेक्ष्य भी इससे अछूता नहीं रहा है।

परन्तु यदि रंगमंच के विधानों का सफल प्रयोग किया जाये तो उपरोक्त ~~आक्षे~~ आक्षेप बहुत मजबूत नहीं ठहरता है।

इस प्रकार यह नाटक अपने कथावस्तु, एवं कुशल संवादों के लिए महत्वपूर्ण रहा है।

7/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'युवा हिन्दी कहानी' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

युवा हिन्दी कहानी, हिन्दी कहानी लेखन परम्परा में उन कहानीकारों की कहानियों को सम्मिलित करती है जो आधुनिक काल की प्रवृत्तियों को मुख्यत: 80 के दशक के बाद लिख रहे हैं।

युवा हिन्दी कहानीकारों में मुख्य रूप से नीलाक्षी सिंह, मो. आरिफ, उमाशंकर इत्यादि के नाम लिये जा सकते हैं।

युवा कहानीकार स्वयं को समाज के उस वर्ग पर फोकस करते हैं जो विकास की प्रक्रिया से पिछड़ा रह गया है। इनकी कहानियों में ग्लोबलाइजेशन तथा ऐसे भारतीय समाज पर उत्पन्न हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रभावों को बड़े ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। 'प्रतियोगिता', 'अयोध्या बाबू सनक गये हैं', जैसी कहानियाँ इस तथ्य को प्रस्तुत करती है।

इसके साथ ही ये कहानियाँ समाज में व्याप्त विसंगतियों पर भी अपना रूख रखती है। कई कहानियाँ प्रेम एवं सामाजिक सौहार्द एवं नफरत के उथल-पुथल से युक्त धागों में पिरोयी गई है।

भाषा एवं शैली के स्तर पर ये कहानियाँ सहज एवं सहज भाषा को अपनाती है। कई नई शैलियों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। चेतना प्रवाह शैली, रिपोर्ताज इत्यादि भी सम्मिलित किये जा सकते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

युवा कहानी समकालीन समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास करती है। भाषा एवं शैली की सहजता इसे पाठक वर्ग से जुड़ने में मदद करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चन्द्रगुप्त नाटक की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'चन्द्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित एक बहुचर्चित नाटक है। इस नाटक की कथावस्तु को प्रसाद ने ऐतिहासिक आधार दिया है।

प्रसाद ने अपने राष्ट्र के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम की धारा को इस नाटक का भी मुख्य आधार बनाया है। चन्द्रगुप्त के माध्यम से राष्ट्रप्रेम को सर्वोपरि घोषित किया है।

चरित्रों की दृढ़ता इस नाटक में भी परिलक्षित होती है क्यों चन्द्रगुप्त अनेक विपत्तियों का सामना करने के बाद भी अपने देशप्रेम के लिए कटिबद्ध रहता है।

कथावस्तु में प्रसाद ने नाटकीयता एवं चमत्कार को भी स्थान दिया है। विभिन्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything other than question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णित दृश्यों को भी प्रसाद ने इस नाटक में स्थान दिया है। अवधि रंगमंच की दृष्टि से इसका मंचन कठिन होना इसकी एक प्रमुख सीमा है।

थोड़ा और विस्तार करें

7/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "भक्तिकाव्य सांस्कृतिक संवाद की कविता है जिसके प्रमाण संतकाव्य और सूफीकाव्य भी है।" दोनों काव्यधाराओं के प्रमुख कवियों का नामोल्लेख करते हुए उपर्युक्त मत का परीक्षण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल वस्तुत: सांस्कृतिक संवाद की कविता है। जहाँ एक ओर संतकाव्य है तो वहीं दूसरी ओर सूफी काव्य है।

संतकाव्य भारतीय समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर करने का भरपूर प्रयास करता है। निर्गुणधारा के कवि कबीर "मुंकिन की तुर्काई देखी हिंदुअन की हिंदुआई" के माध्यम से दोनों पक्षों की जड़ता पर प्रहार करते दिखाई देते है।

तो वहीं तुलसीदास "अगुनहि सगुनहि नहि कछु भेदा गावें मुनि पुरान सब वेदा" के माध्यम से समन्वय स्थापित करते नजर आते हैं।

इसी प्रकार वे "शिवद्रोही मम दास कहावा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सो नर मोहि सपनेहु नहि भावा" के माध्यम वैष्णवों एवं शैवों के मध्य समन्वय का प्रयास करते है।

सूफी काव्य धारा तो सांस्कृतिक समन्वय एवं सामाजिक संस्कृति के विकास का आधार स्तम्भ बन कर उभरी है। जायसी प्रेम को जीवन का सार घोषित करते है

"मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी नहि ते का छार एक मूंठी"

सूफी काव्य न केवल हिन्दू धर्मग्रंथों की कहानियों को अपने काव्यग्रंथों में स्थान देता है बल्कि यहाँ की परम्पराओं यथा षट्ऋतुवर्णन को भी समाहित करता है।

सूफी दर्शन का अद्वैतवाद में विश्वास

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में इसी तत्व को व्यक्त करता है।
अतः यह कहा जा सकता है कि
भक्तिकाव्य सांस्कृतिक संवाद की कविता
है जिसके प्रमाण संतकाव्य और
सूफीकाव्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation